eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

गोस्वामी तुलसीदास नारी प्रशंसक

[1]डॉ0 अमिता रानी सिंह

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग नवयुग कन्या महाविद्यालय, राजेन्द्र नगर, लखनऊ

Received: 08 May 2019, Accepted: 11 May 2019 ; Published on line: 15 May 2019

Abstract

गोस्वामी तुलसीदास रचित 'रामचरित मानस' भाव धर्मग्रन्थ ही नहीं है अपितु व्यावहारिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सामांजस्य स्थापित करने वाला एक विशिष्ट नीति–ग्रंथ भी है। मानस में श्रीराम के व्यक्तित्व के माध्यम से आत्म शान्ति एवं विश्व शान्ति का महत्व प्रतिपादित किया गया है। मनुस्मृति में कहा गया है कि जिस घर में नारी का सम्मान, मान, आदर होता है वहाँ देवताओं का वास होता है। प्रस्तुत आलेख में मैने मानस में निहित प्रशंसक नारी पात्रों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

शब्द संक्षेप– गोस्वामी तुलसीदास, रामचरित मानस, भाव, धर्मग्रन्थ एवं नारी प्रशंसक।

Introduction

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' केवल धर्मग्रंथ ही नहीं है, अपितु व्यावहारिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सामंजस्य के लिये प्रेरित करने वाला एक विशिष्ट नीति–ग्रंथ भी है। विश्व की अनेक भाषाओं में 'मानस' का अनुवाद इसकी प्रसिद्धि का प्रत्यक्ष प्रमाण है। गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीराम के व्यक्तित्व के माध्यम से 'रामचरितमानस' में आत्मशान्ति और विश्वशान्ति का महत्व सिद्ध किया है। साथ ही उनकी प्राप्ति का मार्ग भी प्रशस्त किया है। गोस्वामी जी का सम्पूर्ण जीवन विषमताओं और प्रतिकूलताओं के झंझावात में व्यतीत हुआ। किन्तु राम के प्रति अटूट आस्था और जो श्रद्धा उनके मन में थी उसको उन्होंने डगमगाने नहीं दिया तुलसी ने जीवन पर्यन्त राम के प्रति आस्था के अमृत का सदुपयोग लोकहित में किया और अन्त में 'रामचरितमानस' जैसे सदग्रंथ की रचना की। परहित को सबसे बड़ा लोकधर्म माना।

''परहित सरिस धर्म नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अधमाई''(1)

'रामचरितमानस' सर्वाधिक महत्वूर्ण ग्रंथ है। जिसमें राम को सत्य, शील तथा सौन्दर्य से युक्त आदर्श महामानव के रूप में चित्रित किया है और ऐसी सृष्टि की रचना की है, जिसमें मानवीय, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय सभी पक्षों का निर्वहन किया है भारतीय वाड.मय में नारी को सर्वोच्च स्थान दिया गया है–

''नारी निंदा जनि करौ, नारी नर की खान।
नारी ही से होत नर ध्रुंव प्रहलाद समान(2)

नारी को पुरूष की अर्द्धागिनी कहा गया है–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः(3)

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

नारी बेटी है, बहन है, पत्नि है, मॉ है और दादी भी है। शास्त्रकारों ने एक स्थान पर पुरूष को बीज और नारी को क्षेत्र की संज्ञा दी है। भारतीय वाड.मय में नारी और पुरूष को एक दूसरे का पूरक माना है–

क्षेत्र भूता स्मृता नारी बीज भूतः स्मृतः पुमान
क्षेत्रबीजसमायोगातसम्भवः सर्वदेहिनाम्(4)

गोस्वामी तुलसीदास के नारी विषयक विचार भारतीय दर्शन और वाड.मय की अनमोल थाती है। भारतीय वाड.मय नारी को जहाँ महाभागा, समर्पणशीला, पूजनीया, युग धर्म की रक्षिका गृह–दीप–शिखा आदि विशेषणों से अलंकृत करता है, वहीं दूसरी ओर नारी को भोग्या प्रमदा आदि भी कहा जाता है।

वैदिक काल में नारी को शिक्षित होने की पूरी स्वतंत्रता तथा सुविधा उपलब्ध थी। दर्शन के क्षेत्र में जहॉ मैत्रैयी तथा गार्गी का नाम अमर है। वहीं शिक्षा के क्षेत्र में मदालसा, लोपमुद्रा का नाम स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। देवासुर संग्राम में राजा दशरथ के साथ कैकयी भी नजर आती है। जब युद्ध क्षेत्र में रथ के पहिये की कील अचानक निकल जाती है तब वह अपने हाथ की उगँली फँसाकर अपने सुहाग की रक्षा करती हैं।

यही नारी पुराणकाल तक आते–आते आमोद का साधन मात्र बनकर रह गयी। महाभारत में इस नारी का रूप द्रौपदी जैसा हो गया। जो धूत क्रीड़ा में पाँच पतियों की पत्नि होते हुए भी दाँव पर लगा दी गयी। इसके बाद ही नारी के पतन का क्रमिक इतिहास चलता रहा और वह विलास का साधन मात्र रह गयी महर्षि व्यास के निम्न कथन की अनदेखी शुरू हो गयी–

या श्रीः सुकृतिनां भवनेषु लक्ष्मीः
पापात्मनाम् कृतधियां हृदये सुबुद्धि(5)

इस प्रकार गोस्वामी जी ने अपनी तीक्ष्ण दृष्टि से नारी की इस दुर्दशा को देखा–परखा डा0 माता प्रसाद गुप्त ने तुलसी दास पर नारी–निदंक होने का आरोप लगाया।

ढोल गंवार सूद्र पसु नारी, सकल ताड़न के अधिकारी।

गोस्वामी जी की उक्त उक्ति सर्वाधिक चर्चा में रही, लोगों ने इसमें ताड़ना का अर्थ गलत लगा लिया। लोग इसमें ताड़ना का अर्थ प्रायः नारी को प्रताड़ित करने से लगाते हैं जबकि यह शब्द 'तड़' धातु से न होकर तड़ि धातु से बना है, जिसे हम नियंत्रण के अर्थ में लेते हैं। इस प्रकार इस चौपाई का अर्थ हमें इस प्रकार लगाना चाहिये कि ढोल, गंवार, शुद्र, पशु और नारी इन सबको उचित देखभाल करके हमेशा अपने नियंत्रण में रखना चाहिये–

'नीर, नारी, नाहर जती नीच जाति हथियार,
तुलसी इनहि संभारिये फिरत न लागहिं बारं(6)

काव्य के लक्षण ग्रंथों में दी गयी मान्यतानुसार प्रत्येक महाकाव्य किसी नायक या नायिका के जीवन चरित पर लिखा जाता है। जिसमें उनके उज्जवल चरित का चरित्रांकन किया जाता है। मानस नायक प्रधान महाकाव्य है, पर यह भी सत्य है कि सीता के चरित्रांकन से निरपेक्ष होकर राम के चरित्र को स्पष्ट करना संभव नहीं था। अतः तुलसी को काव्य के उद्देश्य के लिये सीता के चरित्र को चित्रांकित

करना आवश्यक था। यह बात प्रत्येक कालजयी कृति के साथ होती है। मानस में राम और सीता के चरित्रांकन का मूल्यांकन करते हुए यह बात मुख्यतः रेखांकित होती है। इस प्रकार मानस में कुछ सद्पात्र भी हैं और कुछ खल–पात्र भी, सद्पात्रों में कौशलया, सुमित्रा, मंदोदरी, अनुसूया, तारा आदि है। खल पात्रों में कैकयी मंथरा, सूर्पणखां का नाम उजागर है।

सीता – गोस्वामी तुलसीदास अपने ग्रंथ रामचरित मानस में राम वन गमन प्रसंग से सामाजिक ढांचे में नारी की सशक्त भूमिका को प्रमाणित करते दिखाई पड़ते हैं। तुलसी की दृष्टि में पारिवारिक एकता नारी की त्याग भावना एवं आदर्श व्यवहार पर ही आश्रित है। नारी प्रेम और सद्भाव का प्रतीक है। तुलसी की दृष्टि में जहॉ एक ओर नारी पारिवारिक एकता का सृदृढ़ आधार स्तम्भ है, वहीं दूसरी ओर वह साहस की संजीव मूर्ति एवं पातिव्रत धर्म का पालन करने वाली है। राम जैसे ही वन–गमन के लिये तैयार होते हैं वैसे ही सीता के मुख से निकले ये वचन सम्पूर्ण नारी जाति की महानता के द्योतक हैं –

चलन चहत बन जीवन नाथू। केहि सुकृति सन होइहि साथू
की तनु प्रांन की केवल प्राना, विधि करतब कहु जात न जीना(7)

जब राम अपनी पत्नी सीता को वन के संकटों के विषय में बताते हैं और अयोध्या में ही निवास करने के लिए कहते हैं किन्तु सीता जो उत्तर राम को देती हैं वह नारी के महान आदर्श और पवित्र पातिव्रत धर्म का सूचक बन जाता है वे कहती हैं –

मैं पुनि देखि समुझि मन माही पिय वियोग राम दुख जग नाहीं(8)

इस प्रकार सीता को राम का साथ छोड़कर स्वर्ग का सुख भी अपेक्षित नहीं है–

प्राननाथ करूनायतन सुंदर सुखद सुजान
तुम्ह बिनु रघुकुल कुमुद विधु, सुरपुर नरक समान (9)

वन में जब लंकापति रावण सीता का हरण करके लंका ले जाता है और अशोक वाटिका में रखकर अनेक प्रकार के प्रलोभन देते हुए कहता है–

सुन सुन्दरि सिय सुमुखि सयानी, मंदोदरी आदि सब रानी
तब अनुचरी करउँ पन मोरा। एक बार बिलोकु मम ओरा(10)

सीता लंकापति का उत्तर देते हुए कहती है –

सुनु रावन खद्योत प्रकासा कबहुँक नलिनी करइ विकासा
सो भुज कंठ कि तब असि घोरा, सुन रावन प्रमान पन मोरा(11)

इस प्रकार सीता भारतीय नारी भावना का चरमोत्कृष्ट निदर्शन है जहॉ नाना पुराण निगमागमों में व्यक्त नारी आदर्श, सप्राण एवं जीवन्त हो उठे हैं, नारी पात्रों में सीता ही सर्वाधिक विनयशीला, लज्जाशीला, संयमशीला पातिव्रता, दैदिप्यमान नारी है।

चौदह वर्ष के वनवास में राम के साथ रहकर कठोर जीवन व्यतीत किया, चौदह वर्ष बाद राम का राज्याभिषेक हुआ। सीता ने गर्भ धारण कर लिया किन्तु एक भद्र व्यक्ति द्वारा उपहास उड़ाये जाने और कलंक लगाने पर कि सीता दीर्घावधि तक रावण के पास रही फिर भी सीता को आपने अपना लिया उनकी अग्नि परीक्षा क्यों नहीं ली? यह बात सुनकर राजा राम ने राजधर्म का पालन कर

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

गर्भवती सीता को परित्याग कर वनवास दे दिया। इस प्रकार निष्कासन की व्यथा मन में छिपाए महर्षि बाल्मीकि के आश्रम में रहने लगी। वहीं पर उनको लव और कुश दो पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। महर्षि के संरक्षण में दोनों ही पुत्र विद्वान, योद्धा और नीति के ज्ञाता बने। रामचन्द्र द्वारा अश्वमेघ यज्ञ किये जाने पर सीता ने महर्षि से अनुरोध कर यह जानने हेतु अयोध्या भिजवाया कि राम के साथ यज्ञ में किसे पत्नि बनाकर बैठाया है? क्योंकि पत्नि के बिना यज्ञ अधूरा माना जाएगा। महर्षि के साथ लव और कुश भी चले गये बच्चों को रामायण का गाान करते देख सभी जन आश्चर्यचकित हो गये। जब महर्षि ने दोनों बच्चों का परिचय देकर सीता की पवित्रता को उजागर किया। राम ने सीता को बुलवा लिया किन्तु सीता अपने आत्मसम्मान पर ठेस लगने से व्यथित थीं और भीतर से पूर्णतयाः टूट चुकी थीं उन्होंने सबके सामने धरती मॉ को सम्बोधित करते हुए कहा कि हे माँ मैं कलंकित होने पर दुखी हूँ, मुझे अपनी गोद में समा लो। इस प्रकार वह धरती में समा गयी।

कौशल्या :– श्री राम की माता का नाम कौशल्या है ये राजा दशरथ की रानी थी। कौशल देश के राजा की कन्या थी। यह बहुत दयालु और बुद्धिमान थी। जब राजा दशरथ कैकयी और सुमित्रा से विवाह करते हैं तो यह बिना किसी ईर्ष्या के सहजभाव से अपना लेती है और दोनों को बहन जैसा प्यार देती है, कैकयी द्वारा राम को 14 वर्ष का वनवास दिये जाने पर शांत रहती हैं।

सुमित्रा :– यह राजा दशरथ की पत्नि और लखन और शत्रुघ्न की माँ के रूप में मानस में सामने आती हैं। तीनों ही रानियों में सुमित्रा उच्च स्तरीय व्यक्तित्व के रूप में दिखाई देती हैं। वह स्थिति को संभालने के लिये व्यवहारिक तरीके को अपनाती हैं। यद्यपि यह अल्प समय के लिये जनमानस के सम्मुख आती हैं। वनगमन के समय अपने पुत्र लक्ष्मण को भाई राम की सेवा करने के लिये विवेकपूर्ण कार्य करने को प्रेरित किया। राग द्वेष, ईर्ष्या, मद से दूर रहने का आचरण सिखाया और साथ ही मनसा, वाचा, कर्मणा भाई की सेवा में लीन रहने की शिक्षा दी। इस प्रकार सुमित्रा इतिहास की पुनरावृत्ति नहीं अपितु नवीन चेतना से सम्पन्न नारी है।

उर्मिला :– मानस में उपेक्षिता उर्मिला के चरित्र का सफल रेखांकन साकेत और उर्मिला में मिलता है जिसमें उसके उपेक्षित व्यक्तित्व को उभारा गया है। मैथिलीशरण गुप्त कृत 'साकेत' का नवम सर्ग उर्मिला के विरह–विषाद की चरम निदर्शना है। वह अपने मन रूपी मन्दिर में प्रिय की प्रतिमा स्थापित कर सम्पूर्ण भोगों को त्याग कर अपना जीवन योगमय बना लेती हैं–

मानस मंदिर में सती, पति की प्रतिमा थाप
जलती थी उस विरह में, बनी आरती आप
आँखों में प्रिय मूर्ति थी, भूले थे सब भोग
हुआ योग से भी अधिक, उसका विषम वियोग

उर्मिला में क्षत्राणी का व्यक्तित्व भी देखने को मिलता है। लक्ष्मण को शक्ति लगने पर वह शत्रुघ्न के समीप उपस्थित हो जाती है उसके मुख पर सौ अरूणों का तेज चमक रहा था और माथे का सिन्दूर अंगार के समान दिखाई पड़ रहा था।

इस प्रकार उर्मिला और लक्ष्मण का आपसी प्रेम एक दूसरे को पूर्णता की ओर अग्रसर करता है। दोनों का प्रेम शुद्ध, सात्विक और आत्मिक है। उसमें कहीं भी विलासिता की बू नहीं आती। यदि

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

मानस का अच्छी तरह से अध्ययन किया जाये तो स्पष्ट हो जायेगा कि उर्मिला का त्याग सीता के त्याग से कहीं ज्यादा था क्योंकि सीता तो वन में पति के साथ थीं किन्तु उर्मिला ने अपने पति को राम की सेवा करने हेतु सहर्ष भेज दिया और स्वयं राजमहल में रहकर लक्ष्मण से अलगाव सहना पड़ा।

तारा :– तारा रामचरित मानस में वानरराज बालि की पत्नि है। तारा की बुद्धिमता, प्रत्युत्पन्न मतित्वता, साहस तथा अपने पति के प्रति कर्तव्यनिष्ठा को सभी पौराणिक ग्रंथों में सराहा गया है। तारा ने बालि की मृत्योपरान्त ब्राह्मचर्य जीवन व्यतीत किया और राम ने तारा को किषकिन्धा की राजमाता घोषित किया।

मंदोदरी :– यह राजनीति की विशारद और राज–काज की सहायिका थी। समय की प्रतिकूलता को जानकर रावण को बहुत समझाने का प्रयास किया किन्तु रावण की हठधर्मिता के कारण वह सफल न हो सकीं। ऐसी स्थिति में उसने यह मान लिया कि उसका पति रावण काल के वंश में है उसे अभिमान हो गया है–

नाना विधि तेहि कहेसि बुझाई। सभा बहोरि बैठ सो जाई।
मंदोदरी हृदय अस जाना। काल बस्य उपजा अभिमाना। (12)

अहिल्या :– यह सनातन धर्म की कथाओं में वर्णित एक स्त्री पात्र है जो गौतम ऋषि की पत्नी थी और ब्रह्मा जी की मानस पुत्री थी। यह अपार सौंदर्य से युक्त थी। सभी देवता इनसे विवाह करना चाहते थे। ब्रह्मा ने शर्त रखी कि जो सर्वप्रथम तीनों लोकों का भ्रमण कर आएगा वहीं अहिल्या का वरण करेगा किन्तु नारद मुनि ने ब्रह्मा जी को बताया कि ऋषि गौतम ने इन्द्र से पहले भ्रमण किया क्योंकि गौतम ने गाय की परिक्रमा की जो त्रिलोक परिक्रमा के समान होती है। इस तरह माता अहिल्या का विवाह अत्रि ऋषि के पुत्र ऋषि गौतम से हुआ। इन्द्र की गलती के कारण गौतम ने माता अहिल्या को श्रापित कर दिया और पत्थर बना दिया किन्तु राम के पैर का स्पर्श पाकर उनका उद्धार हो गया और वे स्त्री बन गयी।

अनसूया :– अनुसूया प्रजापति कंर्दप और देवहुति की नौ कन्याओं में से एक तथा अत्रि मुनि की पत्नि थीं। उनका सतीत्व का तेज इतना ज्यादा था कि आकाश मार्ग से जाते हुए देवों को उनके तेज का अनुभव होता था। उन्हें सती अनुसूया भी कहा जाता है। वनवास के दौरान अनसूया ने अपने आश्रम में राम सीता लक्ष्मण का स्वागत किया था इन्होंने सीता माता को अखंड सौन्दर्य की औषधि प्रदान की इसके साथ ही उनको पातिव्रत धर्म की शिक्षा भी दी। पतिव्रता देवियों में इनका सर्वोच्च स्थान है।

अनुसुइया के पद गहि सीता, मिली बहोरि सुसील विनिता
रिषिपतिनी मन सुख अधिकाई, आसिष देई निकट बैठाई।(13)
जग पतिव्रता चारिविधि अहहिं। वेद पुरान संत सब कहहिं
उत्तम के अस बस मन माहीं। सपनेहँ आन पुरूष जग नाहीं। (14)

त्रिजटा :– त्रिजटा ने मानस में एक सकारात्मक भूमिका का निर्वहन किया, वह सीता में आशा जगाने का प्रयास करती है। इस प्रकार वह भयावह राक्षसियों के बीच विशिष्ट मानवीय गुणों के साथ एक

विपरीत चरित्र प्रस्तुत करती हैं। वह सीता माता को भविष्यवाणी का स्मरण कराती हैं कि वह राम के साथ सिंहासन पर आरूढ़ होगी। वह निराशा में सांत्वना प्रदान करती है। सीता के प्रति उसके मन में कोई खोट नहीं है।

''त्रिजटा सन बोली कर जोरी, मातु विपति संगिनी तै मोरी।
तजौ देह करू वेगि उपाई। दुसह बिरह अब नहीं सहि जाई (15)

इस प्रकार रामचरितमानस के नारी पात्र भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को महिमा प्रदान करते दिखाई पड़ते हैं। उनमें भारतीय मूल्यों के प्रति असीम आस्था है, आदर्श पतिव्रता समर्पणशीला है, कर्तव्यपरायण व युग धर्म की रक्षिका भी है, ये सभी नारी पात्र भारतीयता के आदर्श से ओत–प्रोत इनसे न केवल चारित्रिक शिक्षा मिलती है अपितु हमारे जीवन को रसमय बनाने की क्षमता भी इन सभी पात्रों में है। नारी पुरूष की जननी है, उसकी संगिनी है। गृहस्थ धर्म के निर्वहन के लिये नारी को परम आवश्यक माना गया है। जहॉ नारी का सम्मान होता है, वहॉ देवता निवास करते हैं। इस प्रकार गृहस्थ जीवन में नारी को बड़ी गरिमा के साथ प्रतिष्ठित किया गया है।

निःसंदेह मानस में नारी पात्र इतने सशक्त व सक्षम है कि वह अपने मृत पति के धड़ विहिन कटे सिर को भी अट्हास करने की क्षमता प्रदान कर सकती है। सती सुलोचना इसका साक्षात प्रमाण है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि गोस्वामी जी ने अपने नारी पात्रों के चरित्रांकन में अत्याधिक उदार दृष्टि अपनायी है। तुलसीदास की सबल लेखनी नारी प्रशंसक रही है।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1– रामचरितमानस – उत्तरकाण्ड (41–1)
2– मानस चंदन त्रैमासिक पत्रिका–डा0 गणेशदत्त सारस्वत–पृष्ठ 27
3– मनुस्मृति 3/56
4– मनुस्मृति 9/33
5– मानस चंदन त्रैमासिक पत्रिका–डा0 गणेशदत्त सारस्वत पृष्ठ–27
6– मानस चंदन त्रैमासिक पत्रिका–डा0 गणेशदत्त सारस्वत पृष्ठ–28
7– रामचरितमानस अयोध्या काण्ड पृष्ठ 388
8– रामचरितमानस अयोध्या काण्ड पृष्ठ 398
9– रामचरितमानस अयोध्या काण्ड पृष्ठ 393
10– रामचरितमानस सुन्दर काण्ड पृष्ठ 708
11– रामचरितमानस सुन्दर काण्ड पृष्ठ 709
12– अरण्य काण्ड – पृष्ठ 614
13– किष्किन्धा काण्ड – पृष्ठ 615
14– सुन्दरकाण्ड – पृष्ठ – 710